Equality समानता

This chapter is about the concept of equality, a value that is also enshrined in our Constitution. In reflecting on this concept it examines the following questions:

यह अध्याय समानता की अवधारणा के बारे में है। समानता को एक मूल्य के रूप में संविधान में भी दर्ज किया गया है। यहां समानता की अवधारणा पर रोशनी डालते हुए निम्नलिखित सवालों को पड़ताल करने की कोशिश की गई है–

Equality समानता

- What is equality? Why should we be concerned about this moral and political ideal?
- Does the pursuit of equality involve treating everyone the same way in every condition?
- How may we pursue equality and minimise inequality in different spheres of life?
- How do we distinguish between different dimensions of equality — political, economic and social?

- समानता क्या है? हमें इस नैतिक और राजनीतिक आदर्श के बारे में क्यों सोचना चाहिए?
- क्या समानता का मतलब व्यक्ति से हर स्थिति में एक समान बरताव करना है?
- हम समानता की ओर कैसे बढ सकते हैं हैं और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में असमानता को न्यूनतम कैसे कर सकते हैं?
- हम समानता के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक आयामों को अलग–अलग कैसे समझ सकते हैं?

Equality समानता

➢ WHY DOES EQUALITY MATTER?

➢ **As a political ideal the concept of equality invokes the idea that all human beings have an equal worth regardless of their colour, gender, race, or nationality. It maintains that human beings deserve equal consideration and respect because of their common humanity.**

➢ समानता महत्त्वपूर्ण क्यों है?

➢ समानता की अवधारणा एक राजनीतिक आदर्श के रूप में उन विशिष्टताओं पर ज़ोर देती है, जिसमें तमाम मनुष्य रंग, लिंग, वंश या राष्ट्रीयता के फ़र्क के बाद भी साझदार होते हैं। समानता का दावा है कि समान मानवता के कारण सभी मनुष्य समान महत्त्व और सम्मान पाने योग्य हैं।

Equality समानता

- **WHAT IS EQUALITY?**
- **human beings should be entitled to the same respect and consideration because of their common humanity.**

- समानता क्या है?
- समानता का हमारा आत्म–बोध कहता है कि साझी मानवता के कारण सभी मनुष्य बराबर सम्मान और परवाह के हकदार हैं।

Equality समानता

- However, treating people with equal respect need not mean always treating them in an identical way. No society treats all its members in exactly the same way under all conditions. The smooth functioning of society requires division of work and functions and people often enjoy different status and rewards on account of it. At times these differences of treatment may appear acceptable or even necessary. For instance, we usually do not feel that giving prime ministers, or army generals, a special official rank and status goes against the notion of equality, provided their privileges are not misused. But some other kinds of inequalities may seem unjust. For instance, if a child born in a slum is denied nutritious food or good education through no fault of his/her own, it may appear unfair to us.

- हालाँकि लोगों से बराबर सम्मान का व्यवहार करने का मतलब ज़रूरी नहीं कि हमेशा एक जैसा व्यवहार करना भी हो। कोई भी समाज अपने सभी सदस्यों के साथ सभी स्थितियों में पूर्णतया एक समान बरताव नहीं करता। समाज के सहज कार्य–व्यापार के लिए कार्य का विभाजन ज़रूरी है। अलग–अलग काम और अलग–अलग लोगों को महत्त्व और लाभ भी अलग–अलग मिलता है। कई बार इस बरताव में यह अंतर न केवल स्वीकार्य हो सकता है, बल्कि ज़रूरी भी लग सकता है। उदाहरण के लिए प्रधानमंत्री या सेना के जनरल को विशेष सरकारी दर्ज़ा या सम्मान देना हमें तब तक समानता की धारणा के विपरीत नहीं लगता जब तक कि उसका दुरुपयोग न हो। लेकिन कुछ अलग किस्म की असमानताएँ अन्यायपूर्ण लग सकती हैं।

Equality समानता

- **The question that arises is which distinctions and differences are acceptable and which are not? When people are treated differently just because they are born in a particular religion or race or caste or gender, we regard it as an unacceptable form of inequality. But human beings may pursue different ambitions and goals and not all may be equally successful.**

- अब सवाल यह उठता है कि कौन–सी विशिष्टताएँ और विभेद स्वीकार किए जाने लायक हैं और कौन–सी नहीं। कई बार लोगों से अलग तरह का बरताव इसलिए किया जाता है कि उनका जन्म किसी खास धर्म, नस्ल, जाति या लिंग में हुआ है। हम असमानता के इन आधारों को अस्वीकार करते हैं। लेकिन लोगों की आकांक्षाएँ और लक्ष्य अलग–अलग हो सकते हैं और हो सकता है कि सभी को समान सफलता न मिले। अगर वे अपने अंदर

Equality समानता

- So long as they are able to develop the best in themselves we would not feel that equality has been undermined. Some may become good musicians while others may not be equally outstanding, some become famous scientists while others more noted for their hard work and conscientiousness. The commitment to the ideal of equality does not imply the elimination of all forms of differences. It merely suggests that the treatment we receive and the opportunities we enjoy must not be pre-determined by birth or social circumstance.

- अगर वे अपने अंदर छुपी संभावनाओं को विकसित करने में सक्षम हैं तो एसा महसूस नहीं होगा कि समानता खतरे में है। कुछ लोग अच्छे संगीतकार हो सकते हैं, जबकि कुछ नहीं। कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन सकते हैं, जबकि कुछ और अपने कड़े परिश्रम या चेतना के लिए विख्यात हो सकते हैं। समानता के आदर्श से जुड़े होने का यह मतलब नहीं है कि सभी तरह के अंतरों का उन्मूलन हो जाए। इसका मतलब केवल यह है कि हमसे जो व्यवहार किया जाता है और हमें जो भी अवसर प्राप्त होते हैं, वे जन्म या सामाजिक परिस्थितियों से निर्धारित नहीं होने चाहिए।

Equality समानता

Natural and Social Inequalities

- A distinction has sometimes been made in political theory between natural inequalities and socially-produced inequalities. Natural inequalities are those that emerge between people as a result of their different capabilities and talents. These kinds of inequalitiesare different from socially-produced inequalities which emerge as a consequence of inequalities of opportunity or the exploitation of some groups in a society by others.

प्राकृतिक और सामाजिक असमानताएँ

- राजनीतिक सिद्धांत में प्राकृतिक असमानताओं और समाजजनित असमानताओं में अंतर किया जाता है। प्राकृतिक असमानताएँ लोगों में उनकी विभिन्न क्षमताओं, प्रतिभा और उनके अलग–अलग चयन के कारण पैदा होती हैं। समाजजनित असमानताएँ वे होती हैं, जो समाज में अवसरों की असमानता होने या किसी समूह का दूसरे के द्वारा शोषण किए जाने से पैदा होती हैं।

Equality समानता

- **Natural inequalities are considered to be the result of the different characteristics and abilities with which people are born. It is generally assumed that natural differences cannot be altered. Social inequalities on the other hand are those created by society. Certain societies may, for instance, value those who perform intellectual work over those who do manual work and reward them differently. They may treat differently people of different race, or colour, or gender, or caste. Differences of this kind reflect the values of a society and some of these may certainly appear to us to be unjust.**

- प्राकृतिक असमानताएँ लोगों की जन्मगत विशिष्टताओं और योग्यताओं का परिणाम मानी जाती हैं। यह आमतौर पर मान लिया जाता है कि प्राकृतिक विभिन्नताओं को बदला नहीं जा सकता। दूसरी ओर वे सामाजिक असमानताएँ हैं, जिन्हें समाज ने पैदा किया है। उदाहरणस्वरूप, कुछ समाज बौद्धिक काम करने वालों को शारीरिक कार्य करने वालों से अधिक महत्त्व देते हैं और उन्हें अलग तरीके से लाभ देते हैं। वे विभिन्न वंश, रंग या जाति के लोगों के साथ भिन्न–भिन्न व्यवहार करते हैं। इस तरह के भेदभाव में समाज के मूल्य प्रतिबिंबित होंगे और इनमें से कुछ हमें निश्चित रूप से अनुचित लग सकते हैं।

Equality समानता

- **This distinction is sometimes useful in helping us to distinguish between acceptable and unfair inequalities in society but it is not always clear or self-evident. For instance,**

- प्राकृतिक और समाजमूलक असमानताओं में फर्क करना इसलिए भी उपयोगी होता है कि इससे स्वीकार की जा सकने लायक और अन्यायपूर्ण असमानताओं को अलग–अलग करने में मदद मिलती है।

Equality समानता

➢ THREE DIMENSIONS OF EQUALITY

➢ After considering what kind of social differences are unacceptable we need to ask what are the different dimensions of equality that we may pursue or seek to achieve in society. While identifying different kinds of inequalities that exist in society, various thinkers and ideologies have highlighted three main dimensions of equality namely, political, social and economic. It is only by addressing each of these three different dimensions of equality can we move towards a more just and equal society.

➢ समानता के तीन आयाम

➢ हमने इस सवाल पर विचार किया कि किस प्रकार के सामाजिक अंतर स्वीकार किए जा सकते हैं। इस पर विचार करने के बाद हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि समानता के वे कौन–कौन से आयाम है जिन्हे हम पाना चाहते हैं। समाज में व्याप्त अलग–अलग तरह की असमानताओं को पहचानते समय विभिन्न विचारकों और विचारधाराओं ने समता के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक तीन आयामों को रेखांकित किया। समानता के इन तीनों आयामों को लक्ष्य करते हुए ही एक अधिक न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज की ओर बढ़ा जा सकता है।

Equality समानता

- **Political Equality**
- **In democratic societies political equality would normally include granting equal citizenship to all the members of the state. As you will read in the chapter on Citizenship, equal citizenship brings with it certain basic rights such as the right to vote, freedom of expression, movement and association and freedom of belief. These are rights which are considered necessary to enable citizens to develop themselves and participate in the affairs of the state.**

- **राजनीतिक समानता**
- लोकतांत्रिक समाजों में आमतौर पर सभी सदस्यों को समान नागरिकता प्रदान करना राजनीतिक समानता में शामिल है। आप नागरिकता के अध्याय में पढ़ंगे कि समान नागरिकता अपने साथ कुछ मूल अधिकार मसलन मतदान का अधिकार, कहीं भी आने–जाने, संगठन बनाने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और धार्मिक विश्वास की आज़ादी लाती है। ये एसे अधिकार हैं, जो नागरिकों को अपना विकास करने और राज्य के काम–काज में हिस्सा लेने में सक्षम बनाने के लिए आवश्यक माने जाते हैं।

Equality समानता

- **Social Equality**
- **सामाजिक समानता**

Equality समानता

➢ Social Equality

➢ For this, it is necessary to minimise the effects of social and economic inequalities and guarantee certain minimum conditions of life to all the members of the society — adequate health care, the opportunity for good education, adequate nourishment and a minimum wage, among other things. In the absence of such facilities it is exceedingly difficult for all the members of the society to compete on equal terms. Where equality of opportunity does not exist a huge pool of potential talent tends to be wasted in society.

➢ आर्थिक समानता

➢ आज अधिकतर लोकतंत्र लोगों को समान अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं। यह माना जाता है कि समान अवसर कम से कम उन्हें अपनी हालत को सुधारने का मौका देते हैं जिनके पास प्रतिभा और संकल्प है। समान अवसरों के साथ भी असमानता बनी रह सकती है, लेकिन इसमें यह संभावना छुपी है कि आवश्यक प्रयासों द्वारा कोई भी समाज में अपनी स्थिति बेहतर कर सकता है।

Equality समानता

- Marxism and liberalism are two important political ideologies of our times. Marx was an important nineteenth century thinker who argued that the root cause of entrenched inequality was private ownership of important economic resources such as oil, or land, or forests, as well as other forms of property. He pointed out that such private ownership did not only make the class of owners wealthy, it also gave them political power. Such power enables them to influence state policies and laws and this could prove a threat to democratic government. Marxists and socialists feel that economic inequality provides support to other forms of social inequality such as differences of rank or privilege. Therefore, to tackle inequality in society we need to go beyond providing equal opportunities and try and ensure public control over essential resources and forms of property.

Equality समानता

- मार्क्सवाद और उदारवाद हमारे समाज की दो प्रमुख राजनीतिक विचारधाराएँ हैं। मार्क्स उन्नीसवीं सदी का एक प्रमुख विचारक था। मार्क्स ने दलील दी कि खाईनुमा असमानताओं का बुनियादी कारण महत्त्वपूर्ण आर्थिक संसाधनों जैसे– जल, जंगल, जमीन या तेल समेत अन्य प्रकार की संपत्ति का निजी स्वामित्व है। निजी स्वामित्व मालिकों के वर्ग को सिर्फ अमीर नहीं बनाता, उन्हें राजनीतिक ताकत भी देता है। यह ताकत उन्हें राज्य की नीतियों और कानूनों को प्रभावित करने में सक्षम बनाती है और वे लोकतांत्रिक सरकार के लिए खतरा साबित हो सकते हैं। मार्क्सवादी और समाजवादीमहसूस करते हैं कि आर्थिक असमानताएँ सामाजिक रुतबे या विशेषाधिकार जैसी अन्य तरह की सामाजिक असमानताओं को बढ़ावा देती हैं। इसलिए समाज में असमानता से निबटने के लिए हमें समान अवसर उपलब्ध कराने से आगे जाने और आवश्यक संसाधनों और अन्य तरह की संपत्ति पर जनता का नियंत्रण कायम करने और सुनिश्चित करने की ज़रूरत है।

Equality समानता

- An opposing point of view can be found in liberal theories. Liberals uphold the principle of competition as the most efficient and fair way of distributing resources and rewards in society. They believe that while states may have to intervene to try and ensure a minimum standard of living and equal opportunities for all, this cannot by itself bring equality and justice to society. Competition between people in free and fair conditions is the most just and efficient way of distributing rewards in a society. For them, as long as competition is open and free, inequalities are unlikely to become entrenched and people will get due reward for their talents and efforts.

Equality समानता

- उदारवादी सिद्धांतों में विरोधी दृष्टिकोण पाया जा सकता है। उदारवादी समाज में संसाधनों और लाभांश के वितरण के सर्वाधिक कारगर और उचित तरीके के रूप में प्रतिद्वंद्विता के सिद्धांत का समर्थन करते हैं। वे मानते हैं कि सबके लिए जीवनयापन के न्यूनतम स्तर और समान अवसर प्रदान करने और सुनिश्चित करने के लिए राज्य को हस्तक्षेप करना है, लेकिन इससे समाज में खुद–ब–खुद समानता और न्याय स्थापित नहीं हो सकता। स्वतंत्र और निष्पक्ष परिस्थितियों में लोगों के बीच प्रतिस्पर्द्धा ही समाज में लाभांशों के वितरण का सबसे न्यायपूर्ण और कारगर उपाय होती है। उदारवादियों का मानना है कि जब तक प्रतिस्पर्द्धा स्वतंत्र और खुली होगी असमानताओं की खाइयां नहीं बनेंगी और लोगों को अपनी प्रतिभा और प्रयासों का लाभ मिलता रहेगा।

Equality समानता

HOW CAN WE PROMOTE EQUALITY?

- हम समानता को बढ़ावा कैसे दे सकते हैं?

Equality समानता

- **Establishing Formal Equality**
- The first step towards bringing about equality is, of course, ending the formal system of inequality and privileges. Social, economic and political inequalities all over the world have been protected by customs and legal systems that prohibited some sections of society from enjoying certain kinds of opportunities and rewards. Poor people were not granted the right to vote in a large number of countries. Women were not allowed to take up many professions and activities. The caste system in India prevented people from the ‘lower’ castes from doing anything except manual labour. In many countries only people from some families could occupy high positions.

Equality समानता

- **औपचारिक समानता की स्थापना**
- समानता लाने की दिशा में पहला कदम असमानता और विशेषाधिकार की औपचारिक व्यवस्था को समाप्त करना होगा। दुनियाभर में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं को कुछ रीति–रिवाज़ों और कानूनी व्यवस्थाओं से संरक्षित रखा गया है। इन रिवाज़ों या कानूनों द्वारा समाज के कुछ हिस्सों को तमाम किस्म के अवसरों और लाभों का आनन्द उठाने से रोका जाता था। बहुत सारे देशों में गरीब लोगों को मताधिकार से वंचित रखा जाता था। महिलाओं को बहुत सारे व्यवसाय और गतिविधियों में भाग लेने की इज़ाज़त नहीं थीं। भारत में जाति–व्यवस्था निचली जातियों को शारीरिक श्रम के अलावा कुछ भी करने से रोकती थी। कुछ देशों में केवल कुछ खास परिवारों के लोग ही सर्वोच्च पदों तक पहुँच सकते हैं।

Equality समानता

- **Attainment of equality requires that all such restrictions or privileges should be brought to an end. Since many of these systems have the sanction of law, equality requires that the government and the law of the land should stop protecting these systems of inequality. This is what our Constitution does. The Constitution prohibits discrimination on grounds of religion, race, caste, sex or place of birth. Our Constitution also abolishes the practice of untouchability. Most modern constitutions and democratic governments have formally accepted the principle of equality and incorporated it as identical treatment by law to all citizens without any regard to their caste, race, religion or gender.**

Equality समानता

- समानता की प्राप्ति के लिए ज़रूरी है कि से सभी निषेध या विशेषाधिकारों का अंत किया जाए। चूँकि एसी बहुत–सी व्यवस्थाओं को कानून का समर्थन प्राप्त है इसलिए यह ज़रूरी होगा कि सरकार और कानून असमानता की व्यवस्थाओं को संरक्षण देना बंद करे। हमारा संविधान ने भी यही किया है। संविधान धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव करने का निषेध करता है। हमारा संविधान छुआछूत की प्रथा का भी उन्मूलन करता है। अधिकतर आधुनिक संविधान और लोकतांत्रिक सरकारें औपचारिक रूप से समानता के सिंद्धात को स्वीकार कर चुकी हैं और इस सिद्धांत को जाति, नस्ल, धर्म या लिंग पर ध्यान दिए बिना 'सभी नागरिकों को कानून के एक समान बर्ताव' के रूप में समाहित किया है।

Equality समानता

- **Equality Through Differential Treatment**
- **However, as we noted earlier, formal equality or equality before law is necessary but not sufficient to realise the principle of equality. Sometimes it is necessary to treat people differently in order to ensure that they can enjoy equal rights. Certain differences between people may have to be taken into account for this purpose.**

- विभेदक बरताव द्वारा समानता
- जैसा कि हम देख चुके हैं, समानता के सिंद्धात को यथार्थ में बदलने के लिए औपचारिक समानता या कानून के समक्ष समानता आवश्यक तो है, लेकिन पर्याप्त नहीं। कभी-कभी यह सुनिश्चित करने के लिए कि लोग समान अधिकारों का उपभोग कर सकें, उनसे अलग-अलग बरताव करना आवश्यक होता है। इस उद्देश्य से लोगों के बीच कुछ अंतरो

Equality समानता

- **For instance, disabled people may justifiably demand special ramps in public spaces so that they get an equal chance to enter public buildings. Or women working in call centres at night may need special protection during the journey to and from the centre so that their equal right to work may be protected.**

- को ध्यान में रखना होता है। उदाहरण के लिए विकलांगों की सार्वजनिक स्थानों पर विशेष ढलान वाले रास्तों (Ramp)की माँग न्यायोचित होगी, क्योंकि इससे ही उन्हें सार्वजनिक भवनों में प्रवेश करने का समान अवसर मिल सकेगा। इसी तरह रात में कॉल सेंटर में काम करने वाली महिला को कॉल सेंटर आते–जाते समय विशेष सुरक्षा की ज़रूरत हो सकती है। इससे उसके काम के समान अधिकार की रक्षा हो सकेगी।

Equality समानता

- **Affirmative Action**
- **Affirmative action is based on the idea that it is not sufficient to establish formal equality by law. When we wish to eliminate inequalities that are deeply rooted, it is necessary to take some more positive measures to minimise and eliminate entrenched forms of social inequalities. Most policies of affirmative action are thus designed to correct the cumulative effect of past inequalities.**

- सकारात्मक कार्यवाई
- सकारात्मक कार्यवाई इस विचार पर आधारित है कि कानून द्वारा औपचारिक समानता स्थापित कर देना पर्याप्त नहीं है। असमानताओं को मिटाने के लिए ज़रूरी होगा कि असमानता की गहरी खाईयों को भरने वाले अधिक सकारात्मक कदम उठाए जाएँ। इसीलिए सकारात्मक कार्यवाई की अधिकतर नीतियां अतीत की असमानताओं के संचयी दुष्प्रभावों को दुरुस्त करने के लिए बनाई जाती हैं।

Equality समानता

- **Affirmative action can however take many forms, from preferential spending on facilities for disadvantaged communities, such as, scholarships and hostels to special consideration for admissions to educational institutions and jobs. In our country we have adopted a policy of quotas or reserved seats in education and jobs to provide equality of opportunity to deprived groups, and this has been the subject of considerable debate and disagreement. The policy has been defended on the ground that certain groups have been victims of social prejudice and discrimination in the form of exclusion and segregation. These communities who have suffered in the past and been denied equal opportunities cannot be immediately expected to compete with others on equal terms. Therefore, in the interest of creating an egalitarian and just society they need to be given special protection and help.**

Equality समानता

- सकारात्मक कार्यवाई के कई रूप हो सकते हैं। इसमें वंचित समुदायों के लिए छात्रवृत्ति और हॉस्टल जैसी सुविधाओं पर वरीयता के आधार पर खर्च करने से लेकर नौकरियों और शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश के लिए विशेष व्यवस्था करने तक की नीतियां हो सकती हैं। अपने देश में वंचित समूहों को अवसर की समानता देने के लिए हमने नौकरियों और शिक्षा में आरक्षित स्थान या कोटा की नीति को अपनाया है। यह नीति बहुत वाद–विवाद और असहमति का केंद्र रही है। इस नीति की इस आधार पर वकालत की गई है कि कुछ समूह वर्जना और अलगाव के कारण सामाजिक पूर्वाग्रह और भेदभाव के शिकार रहे हैं। जो समुदाय अतीत में पीड़ित और समान अवसरों से वंचित रहे हैं, उनसे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे अन्य लोगों से समानता के आधार पर प्रतिस्पर्धा करें। इसीलिए एक समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के हित में उनको विशेष संरक्षण और सहायता देने की आवश्यकता है।